## इकाई–5ः भारतीय पारंपरिक चिकनकारी और रंगाई तकनीक का अवलोकन

### 5.1 भारतीय पारंपरिक चिकनकारी

कढ़ाई कपड़े या अन्य सामग्री को सुई, धागा या सूत के साथ सजाने की हस्तकला है। धार्मिक प्रयोजनों के लिए अलंकृत कढ़ाई के कपड़े या घरेलू वस्तुएं भारत में सांस्कृतिक विरासत का एक चिह्न बन गए हैं। भारत एक विविधता पूर्ण देश है जिसमें संस्कृतियों और परंपराओं की विस्तृत श्रृंखला है। भारतीय कला और शिल्प विश्व प्रसिद्ध हैं। कढ़ाई की परंपरागत तकनीकों को पीढ़ी दर पीढ़ी पर पारित किया गया है और यह पूरे देश के कोने– कोने में विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर तकनीक और उत्पादों की विरासत बन गई है। नीचे भारतीय राज्यों के ऐसे कुछ शिल्पों के बारे में जानकारी दी गई हैः

### 5.1 क विभिन्न राज्यों **की** चिकनकारी

**i.** कश्मीर का कशीदा

कश्मीरी कढ़ाई और शॉल को इसके रंग, बनावट, डिजाइन और तकनीक की सुंदरता के लिए पूरी दुनिया में अच्छी तरह से जाना जाता है। कश्मीर की ऊन की कढ़ाई सर्वत्र प्रसिद्ध है। शायद सबसे अच्छी ज्ञात भारतीय कढ़ाई कश्मीर की कशीदाकारी ही है।

कढ़ाई का उद्देश्य बुने गए शॉल की डिजाइन की नकल करना था, लेकिन समय के साथ कढ़ाई ने अपनी खुद की एक अनूठी शैली बनाई। 20 वीं सदी के मध्य तक कढ़ाई वाले शॉल ने बुने शॉल को पीछे छोड़ दिया। जटिल चिकनकारी के साथ बेहतरीन शॉल बाजार का एक आकर्षण बन गए हैं

*चित्र 23. कशीदा कालीन*

प्रयुक्त रंगः सफेद (भरवां), हरा (जिंगरी), बैंगनी (उदा), नीला (फिरोजी), पीला (जर्द) और काला (मुश्की) कश्मीर शॉल में सबसे अधिक प्रयुक्त रंग हैं। गुलाबी (गुलनार) और लाल रंग (किरमिज) का भी प्रयोग किया जाता है।

प्रयुक्त रूपांकनः रूपांकन ज्यादातर प्रकृति से लिए जाते हैं। शायद क्षेत्र में मुस्लिम प्रभाव की वजह से कश्मीरी कढ़ाई में पशु और मानव आकृतियां नहीं देखी जाती हैं।

– प्रयुक्त पक्षी रूपांकन हैंः तोता, कठफोड़वा, कनारी, मैगपाई और किंग फिशर

– प्रयुक्त पुष्प रूपांकन हैंः आईरिस, कमल, लिली, ट्यूलिप और केसर के फूल

– अन्य डिजाइन हैंः अंगूर, प्लम, चेरी, बादाम और सेब के फूल

– चिनार के पत्ते को एक महत्वपूर्ण रूपांकन माना जाता है

प्रयुक्त कपड़ेः कढ़ाई के लिए रेशम, कपास और ऊन सभी प्रकार के कपड़े का प्रयोग किया जाता है। ऊन, रेशम, कपास और कला रेशम के धागों का प्रयोग किया जाता है

प्रयुक्त टांकेः आम तौर पर साटन **स्टिच**, स्टेम **स्टिच** और चेन **स्टिच** का उपयोग किया जाता है। कभी–कभी रफू और हेरिंगबोन **स्टिच** का भी उपयोग किया जाता है।

**ii.** उत्तर प्रदेश की चिकनकारी

सफेद कढ़ाई को चिकनकारी का काम कहा जाता है। कहा जाता है कि चिकन का काम लखनऊ में आरंभ हुआ था। यह युगों पहले सम्राट हर्ष के शासनकाल में आरंभ हुआ था, वे कलहंस की डिजाइन की कढ़ाई वाले मलमल के वस्त्र पहनने थे।

माना जाता है चिकनकारी कढ़ाई की उत्पत्ति के बारे में दो कहानियाँ हैं। एक कहानी है कि ''एक दिन, गर्मी के मौसम में गांव से गुजरते समय एक यात्री ने लखनऊ पास रहने वाले एक किसान से पानी मांगा, जिसने उसकी दुर्दशा पर दया करते हुए उसे फिर से अपनी यात्रा शुरू करने से पहले अपने घर में आराम करने का आग्रह किया। यात्री उसके आतिथ्य से इतना खुश हुआ कि उसने उसे एक ऐसी कला सिखाने के लिए वादा किया, जो उसे कभी भूखा नहीं रहने देगी।इसके बाद यात्री ने किसान को चिकनकारी की कला में प्रशिक्षण दिया। अपने शिष्य के तकनीक में महारत हासिल कर लेने के बाद यात्री गायब हो गया। चिकनकारों का मानना है कि उसे खुद भगवान द्वारा भेजा गया था।''

एक अन्य कहानी में कहा गया है कि ''लखनऊ में चिकनकारी अवध के राजदरबार द्वारा 19वीं सदी में आरंभ की गई थी। जिसके पास एक विशाल हरम था। मुर्शिदाबाद की एक राजकुमारी का अवध के नवाब से विवाह हुआ था। वह राजकुमारी एक महिला दर्जी थी और उसने अवध के नवाब के लिए एक टोपी में कढ़ाई की। इसमें मलमल के कपड़े पर कपास के धागे से काम किया गया था। जब यह तैयार हो गई तो उसे नवाब के समक्ष प्रस्तुत किया गया। अन्तः पुर की अन्य रानियां राजकुमारी से जलने लगीं और इसलिए उन्होंने विभिन्न वस्तुओं पर काम शुरू कर दिया ताकि उसकी सिलाई की सुंदरता और उसके नमूने की कोमलता में उसके साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश करने लगीं। इस प्रकार हरम में एक महान कला का जन्म हुआ था''।

प्रयुक्त कपड़ाः इस काम के लिए सादे सफेद कपड़े का उपयोग किया जाता है। ज्यादातर सफेद पर सफेद रंग से काम किया जाता है। आम तौर पर उत्कृष्ट मलमल के कपड़े का प्रयोग किया जाता है लेकिन अब यह किमरिख और इसी तरह के कपड़ों पर बनाया जाता है।

प्रयुक्त टांकेः चिकनकारी में टांकों की एक बड़ी विविधता का उपयोग नहीं किया जाता है, हालांकि इसमें साटन **स्टिच**, स्टेम **स्टिच**, बैक **स्टिच**, हेरिंगबोन **स्टिच** और बटन होल **स्टिच** जैसे साधारण टांकों का उपयोग होता है।

चिकनकारी का काम दो प्रकार का होता है – समतल शैली और उभरी गांठों की शैली, उदाहरण के लिए डिजाइन की किस्मों में जाली या नेटिंग। टांकों को तेइपची, खतवा, बखिया, मुरी, फंदा और जाली का नाम दिया गया है।

तेइपची सस्ते काम में इस्तेमाल की जाने वाली एक सरल रफू सिलाई है। आमतौर पर बाहरी रेखा या चलती डिजाइन के लिए इसका उपयोग किया जाता है। तेइपची चिकन के काम की समतल शैली है।

खतवा या खलाओ पिपली का काम है। यह पिपली का एक बेहद जटिल प्रकार है। यह कढ़ाई चिकनकारी की समतल शैली के अंतर्गत आती है।

बखिया कपड़े के सामने के पक्ष पर अंकित डिजाइन के साथ एक उलटी साटन **स्टिच** या हेरिंग बोन बनाती है। धागा मुख्यतः कपड़े के नीचे रहता है। इसे शैडो वर्क भी कहा जाता है क्योंकि कपड़े के पीछे की तरफ हैरिंगबोन में लगने वाले टांके एक छायादार असर पैदा करते हैं।

मुरी उभरे गांठों की शैली के अंतर्गत आता है। मुरी का अर्थ चावल का आकार है। यह आमतौर पर मलमल के कपड़े पर बनाया जाता है, मुरी का उपयोग फूलों के केंद्र में किया जाता है। यह एक समृद्ध उभरा प्रभाव देने वाली सिलाई की एक गांठदार किस्म है। टांका फ्रेंच नॉट है।

फंदा बाजरा के दानों जैसा दिखता है। यह भी उभरी गांठदार शैली है। इस मुरी टांकों से छोटे और कम होता है। इनका एक नमूने में पंखुड़ियों या पत्तियों को भरने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

जाली का काम या जाल या फीता कुछ हद तक धागा खींचकर तैयार किए गए काम जैसे हैं। इसे धागे को बाहर खींचने की बजाय कपड़े में छेद बनाकर किया जाता है। ताने और बाने के धागे को अलग कर छेद में सुई डालकर उन्हें हटाया और कसा जाता है तथा कपड़े को जाली का रूप दिया जाता है।

**यह** कढ़ाई सर्वोच्च उत्कृष्टता की है और केवल सर्वश्रेष्ठ यूरोपीय लेस के साथ तुलनीय है, जो इसके उद्देश्य और प्रभाव में मेल खाती है। चिकन एक पवित्रता दर्शाता है, जो मधुर और नाजुक है। साड़ी की किनारी, ब्लाउज, कुर्ते, कॉलर, रुमाल और सफेद टोपियां सभी में चिकनकारी की जाती है।

**iii**. हिमाचल प्रदेश के चंबा रूमाल

*चित्र 24 उत्तर प्रदेश की चिकनकारी*

चंबा हिमाचल प्रदेश का एक हिस्सा है। चंबा ने स्थानीय राजकुमारों के संरक्षण में पेंटिंग की एक विशिष्ट शैली विकसित की है। कभी यह चित्रकला की पहाड़ी या कांगड़ा स्कूल के उत्तम शैली के लिए विख्यात था। चित्रकला की इस शैली ने उस स्थान की कढ़ाई को प्रभावित किया।

कढ़ाई विशुद्ध रूप से एक घरेलू कला है। चंबा की कढ़ाई को सुई की चित्रकारी माना जा सकता है। चंबा रूमाल सूती सामग्री का एक चौकोर टुकड़ा है, जिस पर बारीक और नाजुक कढ़ाई का काम किया जाता है।

इसके दो अलग–अलग प्रकार हैं:

–चित्रों के पहाड़ी शैली, जो लघु चित्रों की शैली को दर्शाती है।

– लोक शैली में महिलाएं अपने स्वयं के नमूने और डिजाइन का उपयोग कर अपनी चोली और रुमाल (स्कार्फ) की कढ़ाई करती हैं।

प्रयुक्त रूपांकनः रूमाल पर भारतीय पौराणिक कथाओं, महाभारत और रामायण, रास नृत्य, कृष्ण-लीला, पहाड़ी चित्रकला शैली, रागों और रागिनियों, शिकार और शादी के दृश्य एवं चौसर (पासा) के खेल आदि विषयों को चित्रित करने के लिए डिजाइन बनाए जाते हैं। किनारी के लिए पुष्प रूपांकनों का उपयोग किया जाता है।

लोक शैली में पक्षी के सिर के साथ होठों जैसे चोंच की विशेषताओं का गठन करने वाली अजीब डिजाइनों को उकेरा जाता है। इसके अलावा लोक शैली में तैयार किए गए कृष्ण, राधा और गोपियों के चित्र बहुत ही अजीब दिखते हैं।

*चित्र 25 चंबा रूमाल*

प्रयुक्त कपड़ाः चंबा रूमाल के लिए प्रयुक्त कपड़े महीन सूती कपड़े होते हैं। आमतौर पर जमीन की सामग्री सफेद या क्रीम रंग का सूती कपड़ा होता है। यह कपड़ा आम तौर पर प्रक्षालित नहीं होता और इसलिए क्रीम रंग का दिखाई देता है। विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा हाथ से कते मलमल जैसा पतला कपड़ा होता है। आधार के लिए प्रयुक्त एक अन्य कपड़ा हाथ से कता और हाथ से बुना हुआ खद्दर होता है।

प्रयुक्त टांकेः डिजाइन रेशम के धागे से बनाई जाती है। इस कढ़ाई में रंगों की व्यापक विविधता के बिना बट रंगीन रेशमी धागों का इस्तेमाल किया जाता है। प्रयुक्त टांके कपड़े के दोनो पक्षों पर एक ही समय में बारी–बारी से आगे और पीछे की ओर लगाए गए डबल साटन **स्टिच** के टांके है, ताकि दोनों पक्षों पर स्थान को भरा जाए और कढ़ाई दोनों पक्षों पर एक जैसी नजर आए। बाहरी रेखा बनाने के लिए जब भी आवश्यक हो स्टेम **स्टिच** का प्रयोग किया जाता है।

प्रयुक्त रंगः चंबा का कोई रूमाल एक रंग का नहीं होता है। पहले के कुछ नमूनों में नीला रंग प्रमुख है। कृष्ण को जब भी नंगे बदन दर्शाया जाता है, लाल पैरों के साथ नीले रंग में कशीदाकारी की जाती है, कुछ मामलों में यह मॉव है। हरे, नारंगी, पीले और नीले रंग प्रयोग किए जाने वाले अन्य रंग हैं।

चंबा के रूमालों का विशेष महत्व था। देवताओं के प्रसाद, दुल्हन के घर से दूल्हे को दी जाने वाली भेंटों और इसके विपरीत को ढकने के लिए कढ़ाई वाले रुमालों को प्रयोग किया जाता है। विशेष अवसरों या त्योहारों पर तोहफे के रूप में भी इनका उपयोग किया गया। रुमालों को गले में पहना जाता था या सिर पर बांधा जाता था। पासे के कपड़े., टोपी, हाथ के पंखे, तकिये के गिलाफ, वाल हैंगिंग, छत के पर्दे आदि के रूप में घर के सामान पर भी इनका प्रयोग होता था

**iv**. बंगाल का कांथा

बंगाल की एक लोक कला है, जिसमें आधार के रूप में अपशिष्ट/उपयोग की गई सामग्री का प्रयोग करने की वजह से इसे ''उम्र की कला'' के रूप में जाना जाता है। कांथा मूल रूप से रजाई के रूप में बनाए जाते हैं। यह कहा जाता है कि एक कांथा तैयार करने के लिए यह कभी–कभी छह महीने से एक साल का समय लग जाता है। यह हर घर की कीमती सम्पत्ति है। बंगाल की महिलाएं आमतौर पर सफेद साड़ी पहनती हैं। इसलिए, कांथा के लिए आधार सामग्री हमेशा सफेद होती थी। यह कढ़ाई सभी वर्गों के लोगों द्वारा की जाती है और यह काम केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है।

कांथा के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कपड़े में पुरानी साड़ी और धोती की परतों को बड़े करीने से एक साथ रख कर पूरे क्षेत्र को ढकने के लिए उन पर सफेद धागे से टांके लगाए जाते हैं। छोड़ी हुई साड़ियों को एक के ऊपर एक रखा जाता है। किनारों को अंदर मोड़ दिया जाता है, क्षेत्र को सफेद धागे के माध्यम से रजाई बना कर भरा जाता है। इसके अलावा, कढ़ाई के माध्यम से कहानियों और सुपरिचित किंवदंतियों की विस्तृत डिजाइन चित्रित की जाती है।

प्रयुक्त रूपांकनः मुख्य रूप से मानव, पशुओं की आकृति, पुष्प और पत्तों के प्रतीकों का इस्तेमाल किया जाता है। **केंद्रीय** डिजाइन आमतौर पर बहुत सी पंखुड़ियों वाला एक कमल होता है और क्षेत्र में विविध पैटर्न बनाए जाते

हैं। जीवन का वृक्ष, पारंपरिक चित्र, पक्षी, नाव, रथ सबसे आम हैं। किनारे पर लताएं, फूलदार झालरें, सर्पिल और कई रैखिक उपकरण बनाए जाते हैं। आम अनुष्ठानिक रूपांकनों में कमल, बैल, बाघ और चूहा शामिल हैं।

प्रयुक्त रंगः नीले, हरे, पीले, लाल और काले रंग के धागों का प्रयोग किया जाता है। आम तौर पर ये धागे उन छोड़ी गई साड़ियों की किनारियों से लिए जाते हैं, जिनका आधार के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अब किनारियों से लिए गए धागों की बजाय तैयार धागे, रंगीन रेशम या उज्ज्वल किस्म के धागों का इस्तेमाल हो रहा है।

प्रयुक्त टांकेः मुख्य रूप से रफ़ू, साटन और पाश टांकों का प्रयोग किया जाता है। किनारों के लिए स्टेम **स्टिच** का उपयोग किया जाता है। बिंदु और रेखाएं बनाने वाले बहुत छोटे रफ़ू टांकों का प्रयोग सबसे आम है। कांथा पर पिपली का काम भी देखा जाता है।

कांथा सात प्रकार के होते हैं:

लेपः यह सर्दियों में इस्तेमाल करने के लिए एक मोटी रजाई जैसा बना होता है।

सर्फनीः यह भी एक रजाई जैसा बनता है जो कपड़े में लपेटकर या ढक कर और औपचारिक उद्देश्य के लिए प्रयोग किया जाता है।

बेटनः किताबों, कीमती सामान आदि को लपेटने के काम आता है। यह वर्गाकार होता है। एक केंद्रीय आकृति और दो या तीन किनारियां होती हैं।

वारः आयताकार होता है, तकिए के गिलाफ के रूप में प्रयोग किया जाता है।

आरसीलताः शीशा और कंघी के लिए एक आवरण के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

दुर्जनीः यह आकार में वर्ग जैसा है और इसे बटुए को खोल माना जाता है।

रूमालः बारह इंच का एक वर्गाकार रूमाल है।

सुजनीः यह कम मोटाई वाली बिस्तर की चादर होती है और औपचारिक अवसरों के दौरान एक बिछावन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

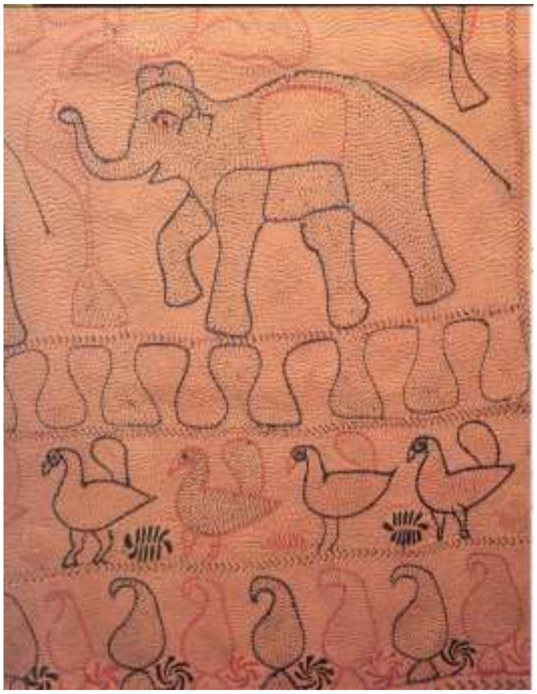

**V.** कर्नाटक की कसुती

कर्नाटक के क्षेत्र में प्रसिद्ध, कसुती कढ़ाई की कला विशुद्ध रूप से एक घरेलू कला थी। हिंदी में कशीदा का मतलब कढ़ाई है, जबकि कर्नाटक की भाषा कन्नड़ में कसुती इसके समकक्ष है। कसुती कढ़ाई विशेष रूप से बीजापुर, धारवाड़, बेलगाम, मिराज, सांगली और जामखंडी के जिलों में कई स्थानों में प्रसिद्ध थी। कसुती एक कुटीर उद्योग नहीं है, यह केवल एक हस्तकला और महिलाओं के एक शगल के रूप में विकसित है। यह कढ़ाई महिलाओं द्वारा अपने निजी इस्तेमाल के लिए तैयार की जाती है।

कुनची (बोनट और टोपी संयुक्त), लहंगा (स्कर्ट), शरारा (साड़ी का पल्लू), कुसुबा (चोली) और कुलाई (बोनट) ऐसे पांच वस्त्र हैं, जिन पर कसुती बनाई जाती है। इन कपड़ों का महिलाओं और बच्चों द्वारा प्रयोग किया जाता था और अगर माँ उन्हें काढ़ सकती तो वह बहुत खुश होती है।

पहले जिस सामग्री पर कसुती कढ़ाई की जाती थी, वह ज्यादातर खान होता था, जिसे ब्लाउज, टुकड़े और साड़ी के रूप में प्रयोग किया जाता था।

आज, किसी भी प्रकार के कपड़े पर कसुती कढ़ाई की जाती है। यह पर्दे, कुशन कवर और हाथ से बुने हुए कपड़े के कई अन्य घरेलू सामानों पर की जाती है। जहाँ तक डिजाइन का संबंध है, हिन्दू रूपांकन यहाँ प्रबल हैं और मुस्लिम प्रभाव पूरी तरह से अनुपस्थित लगता है।

प्रयुक्त रूपांकनः मंदिर वास्तुकला, दक्षिण भारत के गोपुरम और तोता, मोर, हंस, और कमल का फूल, रथ और पालकी, पक्षी की आकृति, और गिलहरी आम हैं। रूपांकनों मे पवित्र बैल, हाथी और हिरण आदि पशुओं का इस्तेमाल होता है। कसुती कढ़ाई के लिए प्रयुक्त अन्य डिजाइनों में रैटल, पालना, फूलदान और तुलसी का गमला आदि शामिल हैं। कभी–कभी घोड़े, शेर या बाघ दिख सकते हैं, लेकिन कसुती में बिल्लियों और कुत्तों को कभी नहीं देखा जा सकता। पुष्प रूपांकनों के अलावा ज्यादातर कमल का प्रयोग किया जाता है।

*चित्र 27 कसुती का काम*

प्रयुक्त टांकेः टाँके सरल होते हैं। कसुती में चार प्रकार के टांके अर्थात् गवन्ती, मुरगी, नेगी और मेंथी का उपयोग किया जाता है। कसुती को धागे की गणना द्वारा बनाया जाता है और सीधे–उल्टे पक्ष एक जैसे होते हैं

1. गवन्ती एक पंक्ति और वापस या दोहरी रनिंग **स्टिच** है, यह नाम गोवान्ति से बना है, जिसका अर्थ कन्नड़ भाषा में एक गाँठ है।

2. मुर्गी एक सीढ़ी के पादान जैसी प्रतीत होती है क्योंकि टांके आगे–पीछे चलते हैं।

3. नेगी साधारण रनिंग या रफू **स्टिच** है। इसमें एक बुनी हुई डिजाइन का समग्र प्रभाव पड़ता है। बनाई गई डिजाइन बुनाई के नमूने जैसी दिखती है और सीधे और उल्टे पक्ष समान नहीं होते।

4. मेंथी साधारण क्रॉस **स्टिच** है।

आज, कोहिनूर और एंकर धागे या मजबूत प्रकृति के शुद्ध रेशमी धागे और चटक रंग के मर्सराइज्ड धागे कसुती कढ़ाई के लिए उपयुक्त हैं। आमतौर पर एक सूत का प्रयोग किया जाता है। काम की शुरुआत से पहले या काम के अंत में कभी गाँठ नहीं डाली जाती है।

रंगः कसुती के लिए ज्यादातर एक काले और काले रंग की पृष्ठभूमि पर नारंगी, हरे, बैंगनी, लाल, और सफेद रंग का इस्तेमाल किया जाता है।

अब कसूती कपड़े, साड़ी, तकिए के गिलाफ, दरवाजे के पर्दे, मेजपोश आदि किसी भी तरह के कपड़ों पर की जाती है।

**vi**. पंजाब की फुलकारी

फुलकारी का शाब्दिक अर्थ फूलों की कला है। पंजाब में फुलकारी को दहेज का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है, विवाह के साथ जुड़े महत्वपूर्ण समारोहों में से प्रत्येक के बाग का एक विशेष प्रकार का पहनावा जुड़ा होता है। नानी या मां चोप की कढ़ाई में गर्व अनुभव करती हैं। दादी एक पवित्र अनुष्ठान करने के लिए पड़ोसियों और दोस्तों को आमंत्रित करके एक शुभ दिन पर चोप की कढ़ाई शुरू करती है। बाद में, यह एक सुंदर और शानदार शाल में परिवर्तित होता है। इसलिए बाग या फुलकारी केवल एक सुंदर पारंपरिक कला ही नहीं बल्कि मातृ प्रेम और कढ़ाई में व्यक्त विश्वास का एक प्रतीक है।

प्रयुक्त कपड़ाः फुलकारी की सुंदरता काफी हद तक जमीन की सामग्री के रंग पर निर्भर करती है। बाग और फुलकारी की कढ़ाई के लिए हमेशा खद्दर के कपड़े का प्रयोग किया जाता था। यह हाथ से काती और हाथ से बुनी सामग्री होती थी। खद्दर के कपड़े का रंग ज्यादातर लाल, सफेद और नीला या काला होता था।

प्रयुक्त धागाः शुद्ध रेशमी धागे का प्रयोग किया जाता है। यह बिना बटा हुआ रेशमी लच्छा होता है, जिसे पैट कहा जाता है। फुलकारी काम के लिए सुनहरे पीले, हरे, सफेद, लाल और नारंगी पाँच रंग के रेशम के लच्छे का चयन किया जाता है।

प्रयुक्त रूपांकनः रूपांकनों फुलकारी डिजाइनों में क्षैतिज ऊर्ध्वाधर और विकर्ण टांके ज्यामितीय पैटर्न बनाते हैं। डिजाइन जरूरी तौर पर ज्यामितीय होती है क्योंकि इसे धागे की गणना द्वारा बनाया जाता है।

प्रयुक्त टांकेः फुलकारी में रफू के लंबे और छोटे टांकों का उपयोग किया जाता है।यह कढ़ाई का एक अनूठा तरीका है जो, पूरी तरह से कपड़े के उलटे पक्ष पर बनाया जाता है। डिजाइन न तो तैयार की जाती है और न ही उसे ट्रेस किया जाता है।

फुलकारी में अलंकरण बिखरा हुआ होता है, जबकि बाग में, पूरे क्षेत्र को पाट या रेशम के लच्छों से भरा जाता है और खूबसूरत रंगों के सम्मिश्रण से आधार कपड़े का एक भी धागा दिखाई नहीं देता है।

फुलकारी के प्रकारः

फुलकारी के कई प्रकार हैं। उन्हें चार या पांच मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है।

चोप और सुबेर शादी की फुलकारियां है और विवाह समारोह के दौरान उसे मातृ पक्ष के संबंधियों द्वारा दुल्हन को दिया जाता है।

सादे लाल या गहरे लाल खद्दर के शाल को सालू के नाम से जाना जाता है, इसका घर में दैनिक रूप से पहनने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

तिल पात्र शॉल में बहुत कम कढ़ाई और निम्न गुणवत्ता का खद्दर होता है, और अक्सर विवाह के दौरान कर्मचारियों को भेंट दिया जाता है। तिल पात्र सचमुच ''तिल'' के बीज के आकार अर्थात् बिंदीदार डिजाइन के साथ बनाया जाता है।

*चित्र 28. फुलकारी*

निलक काले या नीले खद्दर पर पीले और हल्के लाल पैट के साथ बनाया जाता है। यह किसान महिलाओं में लोकप्रिय है।

बाग के प्रकारः

घूँघट बाग या घूंघट शाल में शाल के उस हिस्से पर कढ़ाई का एक त्रिकोणीय पैच होता है जो पहनने पर सिर को ढकता है।

वरिदा बाग दूल्हे की मां द्वारा दुल्हन को दिया जाता है।

**vii**. कच्छ की कढ़ाई

कच्छ गुजरात के चरम पश्चिमी कोने में स्थित है। सबसे महत्वपूर्ण कच्छ चिकनकारी का प्रतिनिधित्व मोचियों, कनबियो, अहिरों और रबारियों द्वारा किया जाता है। कच्छ की कढ़ाई ज्यादातर ग्रामीण उपयोग के साज–सामान और पशुओं के फंदे, घाघरा, चोली, तोरण या दरवाजे के **वंदनवारों** जैसे व्यक्तिगत कपड़ों पर किया जाता है और जीवन के ग्रामीण तरीके का संकेत करते हैं।

मोची भारतः कच्छ के सुई के काम को लोकप्रिय रूप से मोची भारत के रूप में जाना जाता है, जो आम तौर पर कच्छी भरत नाम के नीचे पारित होता है। पहले इस विशेष शिल्प से मोची या पारंपरिक तौर पर जूता बनाने वाले समुदाय के सदस्य जुड़े हुए थे। इससे एक झुकी हुई सुई ''अरी'' के नाम पर अरीभारत का भी नाम दिया जाता है।

आम तौर पर प्रयुक्त सामग्री साटन होती है। सिलाई चेन **स्टिच** जैसी दिखती है।

*चित्र 29. कच्छ कढ़ाई*

कनबी भारतः कनबी किसान हैं, जो अपने धीरज भरे काम के लिए जाने जाते हैं। कनबी भारत में सूती धागे का उपयोग कर हेरिंगबोन, चेन**स्टिच** और रफू टांकों का प्रयोग किया जाता है। प्रयुक्त रंगों में भगवा पीले, सफेद का मूल रंग के रूप में और हरे और बैंगनी रंग का कभी–कभी उपयोग किया जाता है। रूपांकनों में तोते, सूरजमुखी आम की कोंपलों, लताओं, सूरजमुखी, कैक्टस फूल (केइदा) तोते, मोर, आदि का उपयोग किया जाता है।

अहीरः अहीर सौराष्ट्र के प्राचीन किसान समुदाय का एक हिस्सा हैं। इन ग्रामीणों द्वारा अपने अवकाश के समय में अपने खुद के कपड़ों पर की जाती है, कढ़ाई बिक्री के लिए नहीं होती। उनकी कढ़ाई कनबी कढ़ाई के समान है। वे भी ''अरि'' या क्रोशिए जैसी झुकी हुई सुई का उपयोग करते हैं, और डिजाइन बड़े और समतल हो**ते** है और कभी कभी छोटे ग्लैमर का एक स्पर्श देने के लिए दर्पण लगाए जाते हैं। काम बहुत ही महीन और नाजुक होता है।

रबारीः रबारी एक यायावर जनजाति थी। कढ़ाई की उनकी शैली अहीरों की तुलना में काफी अलग है। कढ़ाई आमतौर पर लाल रंग की एक गहरी पृष्ठभूमि पर हल्के रंग के धागों से की जाती है, टांकों को स्पष्ट करने के लिए काफी प्रभावशाली होती है। पैच वर्क की तरह, रंगीन और नमूने बनाए कपड़े के टुकड़ों को अलग–अलग आकार में काटा जाता हैं और फिर एक सादे रंग की पृष्ठभूमि पर उन्हें सिला जाता है। यह छतरियों, दीवार की सजावट, और घरेलू इस्तेमाल की अन्य वस्तुओं पर की जाती है, लेकिन कपड़ों पर नहीं। रबारी अपनी कढ़ाई में ज्यादातर डबल क्रॉस **स्टिच** का उपयोग करते हैं, जो स्कर्ट की किनारी पर किया जाता है।

चित्र 30. सोने और चांदी की कढ़ाई

### viii.सोने और चांदी की कढ़ाई

सभी भारतीय चिकनकारी में सोने और चांदी की कढ़ाई शायद सबसे पुरानी और सबसे आकर्षक है। सोने और चांदी कढ़ाई देश भर में लगभग सभी स्थानों पर प्रचलित है, लेकिन आगरा, दिल्ली, लखनऊ, कश्मीर, भोपाल, वाराणसी, सूरत, मुंबई और हैदराबाद को इस प्रकार के काम के लिए जाना जाता है। कढ़ाई भारी और हल्की दो प्रकार की होती है। जरदोजी भारी और कामदानी हल्के प्रकार की कढ़ाई है। जरदोजी में टांके बहुत करीब होते हैं और वे भी बहुत विस्तृत होते हैं। हल्के प्रकार की कामदानी का महीन कपड़ों पर इस्तेमाल किया जाता है और यह एक सरल और कम विस्तृत प्रकार है।

जरदोजी इनके उपयोग के साथ तैयार किया जाता है

– बदलाः धातु की पतली पट्टियां

– गिजाजः गोल पतले तार

– सिताराः धातु का एक छोटा टुकड़ा जो सितारे की तरह दिखाई देता है

– सलमा

जरदोजी, पर्दे, भारी कोट, कुशन, जूतों और पशुओं के साज–सामान पर तैयार किया जाता है, जबकि कामदानी हल्का प्रकार है जो टोपियों, नकाब, आदि जैसे परिधान उत्पादों पर किया जाता है

प्रयुक्त टांकेः इस प्रकार की कढ़ाई में कई प्रकार के टाँकों का उपयोग किया जाता है। लगाए जाने वाले टांकों मे काउचिंग, साटन, चेन, स्टेम और रनिंग **स्टिच** के बुनियादी प्रकार शामिल हैं। कशीदाकारी करने के लिए कपड़े

को एक लकड़ी के फ्रेम पर फैलाने की जरूरत होती है और पत्तियों और फूलों की पंखुड़ियों जैसे डिजाइन को एक उभार प्रभाव देने के लिए गद्देदार बनाया जाता है।

सोने और चांदी की कढ़ाई के कई प्रकार हैं:

– काठियावाड़ी काम सोने और चांदी के सितारों और सोने के धुमावदार तार का प्रयोग किया जाता है। सूरत में इसे बदलानी कहा जाता है

–कामदानी या बदला, सोने और चांदी की कढ़ाई का एक रूप है, जिसमें महीन सुइयों की मदद से सोने या चांदी के चपटे तारों को सफेद कपड़े में सिला जाता है।

– मकाइश का काम बिना **घुमा**व के बदला नामक शुद्ध चांदी के तार के उपयोग के साथ किया जाता है। यह काम भारत के उत्तरी भाग में बहुत लोकप्रिय है।

– जयपुर में लोकप्रिय, गोटे का काम मढ़ाई (इनेमलिंग) का एक समग्र प्रभाव देता है। गोटे को पक्षियों, जानवरों, मानव आकृतियों के सटीक आकार में काटा जाता है और चांदी एवं सोने के तारों से कपड़े से जोड़ा जाता है, जबकि चारों ओर के खाली भाग को रंगीन रेशमी कपड़ों से ढका जाता है।

सोने और चांदी की कढ़ाई किसी भी प्रकार के कपड़े पर एक पतले तार के साथ आसानी से की जा सकती है। डिजाइन को पहले कपड़े पर अंकित किया जाता है। सोने और चांदी के काम की कढ़ाई करने के लिए महीन सुइयों और धागे का इस्तेमाल करने की जरूरत होती है। सोने और चांदी के काम में ऊपर रहेगा और धागा केवल उलटी तरफ दिखाई देगा।

5.2 पारंपरिक रंगाई तकनीक

कपड़ों ने प्राचीन काल से विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और सभी जलवायु परिस्थितियों में दुनिया में एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया है। जब लोगों ने बुनाई सीखी और वस्त्र तैयार किए गए तब स्वाभाविक रूप से उन्होंने जो भी सामग्री आसानी से उपलब्ध थी, उसी का उपयोग किया। समय के साथ, कारीगरों के हाथों से वस्त्रों की डिजाइनिंग विकसित हुई है और विभिन्न तकनीकों के माध्यम से कपड़े और परिधानों को समृद्ध बनाया है।

भारत के पारंपरिक भारतीय वस्त्र उद्योग में वस्त्र सजावट की तीन मुख्य पारंपरिक तकनीकें हैं: करघा बुनाई और अलंकरण, प्रतिरोधित रंगाई का काम, जिसमें बांध कर रंगाई और छपाई तथा कढ़ाई शामिल है।

5.2.1 बांध कर रंगना और इक्कत कपड़ा

मलय शब्द मेंगिकत के व्युत्पन्न इक्कत, जिसका अर्थ ''बांधना'' या ''बाध्य करना'' है, दुनिया भर में जाना जाता है। इस तकनीक में बुनाई के पहले ताने और बाने धागों को बांधने (प्रतिरोध)` और रंगाई की जरूरत पर जोर देती है। उपमहाद्वीप में कपड़ा इस प्रतिरोधित धागे द्वारा उत्पादित काम को बांध कर रंगे वस्त्र बंधा और पटोला कहा जाता है।

*चित्र 31. बरकरार बंधनों के साथ बांधनी*

**I**. बांधनी

बंधन और बंध संस्कृत शब्द हैं और इनका अर्थ ''बांधना'' है और इस भारतीय शब्द से एक **बिंदुओं** वाले रूमाल के लिए अंग्रेजी नाम **"बंदाना"** है, लेकिन इस टाई और डाई तकनीक को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके मलय –इन्डोनेशियाई नाम, पलंगी से जाना जाता है। बांधनी शब्द कपड़े की रंगाई से पहले कपड़े को चुटकी से ऊपर उठाने और प्रतिरोधित करने की तकनीक और तैयार कपड़े दोनों को दर्शाता है। राजस्थान और गुजरात अपने उत्कृष्ट और विपुल बांधनी के अपने उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। सिंध और मध्य प्रदेश में बांधनी का मोटा काम किया जाता है। पश्चिमी भारत की ग्रामीण महिलाओं के पारंपरिक पहनावे में ओढ़नी शाल, चोली, घाघरा और साड़ी भी शामिल है।

सरलता से बंधे बांधनी कपड़े सस्ते होते हैं और यह गरीब समुदायों की महिलाओं के लिए एक रंगीन फैशन की पोशाक बनाने के सबसे सस्ते तरीकों में से एक है। जब **कई** महीन गांठें बांधी जाती हैं, तब बांधनी की कीमत तेजी से बढ़ जाती है और फिर यह अमीर वर्ग के लिए संरक्षित हो जाता है। भारत के बांध कर रंगे गए सबसे अच्छे कपड़े शायद गुजरात में तैयार किए जाते हैं। इसे बंधेज के रूप में भी जाना जाता है, यह अति उत्तम किस्म के सूती मलमल पर तैयार किया जाता है, कभी–कभी मलमल को जामदानी तकनीक में सोने के चेक और रूपांकनों के साथ संयुक्त किया जाता है। गुजरात में रेशम और अच्छी गुणवत्ता के कपास से बहुत अच्छी बांधनी बनाई जाती है, जिसे शादी के कपड़े के रूप में पहना जाता है।

कच्छ और सौराष्ट्र बहुत अच्छे और बहुत सरल काम के केंद्र हैं। भुज, जामनगर, पोरबंदर, मोरबी, राजकोट, सुंदरनगर, पेठापुर गुजरात में अन्य स्थान हैं।

इस शिल्प राजस्थान के कई स्थानों में भी प्रचलित है लेकिन बेहतरीन बांधनी बीकानेर और सीकर जिलों में बांधी जाती है। राजस्थान में गुजरात की अपेक्षा रंग की एक बड़ी संख्या का उपयोग किया जाता है, और रंग के घोल में डुबाने की जगह बहुत से रंग हाथ से मौके पर रंगे जाते हैं। बांधनी वस्त्रों को बांधने का ज्यादातर काम घर के भीतर, मुख्य रूप से महिलाओं या युवा लड़कियों द्वारा किया जाता है। प्रयुक्त सामग्री में मिल के बने पतले कपड़े, या तो जार्जेट के रूप में जाना जाने वाला एक ढीला बुना रेशमी कपड़ा अथवा मलमल नामक सूती कपड़े का प्रयोग

किया जाता है। इस कपड़े को आम तौर पर बंधे हुए मूल धागों के साथ बेचा जाता है, जो बांध कर रंगे कपड़ों की असलियत का प्रतिनिधित्व करता है।

*चित्र 32 बंधन हटाने के बाद बांधनी*

**II**. लहरिया

19 वीं और बीसवीं सदी में, राजस्थान के व्यापारी और भारत का प्रमुख व्यापारी समुदाय, मारवाड़ी, अपने **व शष्ट**नशान के रूप में अलंकृत, चमकीले रंग की पगड़ी बांधते थे। ये पगड़ियां लहरिया तकनीक से बनती हैं जिसका **हिंदी** में अर्थ है ''लहर''। यह प्रक्रिया राजस्थान के –जोधपुर, जयपुर, उदयपुर और नाथद्वारा के रंगाई कस्बों में प्रचलित है। कपड़े आमतौर पर पगड़ी या साड़ी को लंबाई में एक कोने से विपरीत किनारे की तरफ तिरछा मोड़ा जाता है और उसके बाद आवश्यक अंतराल पर बांध कर रंगा जाता है।

**III**. पटोला

भारत के इक्कत वस्त्रों की डिजाइन, गुणवत्ता और तकनीक की मौलिकता नायाब हैं। पटोला कपड़े का विशेष महत्व है। पटोला बुनाई एक प्राचीन भारतीय शिल्प है, जो 16वीं सदी में मलाया और इंडोनेशिया के लिए एक विलासिता पूर्ण निर्यात रहा है, जहां पटोला को इसकी उत्कृष्टता के लिए प्राप्त और पोषित किया गया था और इसके जादुई और पवित्र गुणों के लिए इसे श्रद्धेय जाना जाता था। आज, शानदार और महंगे सिल्क के ये वस्त्र बहुत ही सीमित पैमाने पर गुजरात के पाटन में बनाए जाते हैं। जबकि, उड़ीसा और आंध्र प्रदेश की दोहरी और एकल इक्कत बुनाई परंपरा फलफूल रही है और फैशन के रंग और नमूनों साड़ी, कपड़े प्रस्तुत कर हथकरघा कपड़ा बाजार में कपड़ों की बाढ़ ला रही हैं।

ये दोहरी और एकल इक्कत कपड़े पाटन, सूरत और अन्य केंद्रों में बुने जाते थे, लेकिन अब उनकी बुनाई पाटन में जैन परिवारों में ही की जाती है। पटोला की सस्ती नकल राजकोट, सौराष्ट्र में बुनी जाती है और दक्षिण में आंध्र प्रदेश में एकल और दोहरे इक्कत दोनों बुने जाते हैं।

रूपांकनों में या तो किनारे के आसपास या **केन्द्रीय** क्षेत्र में फूल और जवाहरात, हाथी, पक्षी और नर्तकियों और अक्सर कुछ ज्यामितीय तत्वों का प्रयोग किया जाता है। मुस्लिम समुदायों ने खुद को अमूर्त डिजाइन तक सीमित कर दिया।

चित्र 33 लहरिया

चित्र 34 गुजरात का पाटन पटोला

*चित्र 35 राजकोट पटोला*

हालांकि पटोला के बुनकरों का करघा सरल प्रतीत होता है, पर कपड़ा बुनने के लिए धागे की तैयारी, बुनाई के तरीके और समायोजन में काफी श्रम लगता है।

**IV**. उड़ीसा और आंध्र प्रदेश के बंधास

उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में इक्कत कपड़ा अनिवार्य रूप से पश्चिम की इक्कत बुनाई की तकनीक से ही तैयार किया जाता है, लेकिन करघे और उपकरण काफी अलग हैं। उड़ीसा में बहुत पतले धागों का उपयोग कर और धागों की छोटी संख्या, गुजराती पटोला इक्कत में 12 की तुलना में सामान्यतः एक आयताकार फ्रेम पर 2 या 3 के समूह में, को बांधने और रंगने के द्वारा बारीक विस्तृत और वक्रीय नमूने प्राप्त किए जाते हैं।

पश्चिमी उड़ीसा में सुंदरगढ़, संबलपुर, बोलांगीर, कालाहांडी और फुलबनी जिले हैं, जिनमें संबलपुर और बोलांगीर प्राथमिक हथकरघा बुनाई क्षेत्र हैं। इस क्षेत्र की साड़ी को अक्सर **"संबलपुरी सारीस"** कहा जाता है। पश्चिमी उड़ीसा की पारंपरिक साड़ी में से अधिकांश इक्कत काम में विशेषज्ञता प्राप्त भुलिया मेहरों के साथ, मेहरों द्वारा बुनी जाती है।

रेशमी और सूती कपड़े में आम तौर पर, फूलों की डिजाइन, जानवर और मछली, शंख, रूद्राक्ष, गज (हाथी), तारे, हाथी, हिरण, तोता, नवगजराज, कमल, और अन्य फूलों, लताओं, कुम्भ (छोटे त्रिकोण) जैसे कुछ पारंपरिक रूपांकनों के साथ दांती (दांत की तरह) जैसे नमूनों का प्रयोग किया जाता है।

*चित्र 36. एक नमूने में बंधे धागे*

*चित्र 37. बंधन हटाने के बाद धागे*

*चित्र 38. उड़ीसा का इक्कत*

आंध्र प्रदेश का बंधास

चिरला आंध्र प्रदेश के तट के निकट स्थित एक गांव है। वर्गाकार दोहरे इक्कत कपड़े को तेलिया या एशिया रुमाल के रूप में जाना जाता है, जो यहाँ मुस्लिम बाजार के लिए तैयार किया जाता है, मुख्य रूप से सिर ढकने के कपड़े के रूप में प्रयुक्त होता है। उन्हें आज के पाकिस्तान और बांग्लादेश में बेचा जाता था और मध्य पूर्व, अफ्रीका के देशों और बर्मा के लिए निर्यात किया जाता था। चिरला में, तेलिया रुमालों को अलीजरीन रंजक से रंगा जाता था, जो एक तेल की गंध छोड़ता है, जिससे यह नाम लिया गया था। इस क्षेत्र में पदमशाली और देवांगुला समुदाय इक्कत की बुनाई में लगे हैं।

*चित्र 39 चिरला के तेलिया रुमाल*

*चित्र 40 यार्डेज कपड़ा*

*चित्र 41. पोचमपल्ली साड़ी*

डिजाइन ज्यामितीय या आलंकारिक कभी–कभी घड़ियों और हवाई जहाज के आकार की होती हैं। आज, कुछ जीवित बुनकर मछुआरों जैसे स्थानीय ग्राहकों को उनकी आपूर्ति करते हैं, जो लूंगी या पगड़ी के रूप में उनका उपयोग करते हैं। चिरला में इक्कत की बुनाई **में** गिरावट आई है और यह पोचमपल्ली और आसपास के गांवों में फल–फूल रहा है। पोचमपल्ली एक बड़ा गांव है, जो हैदराबाद से लगभग पचास किलोमीटर दूर आंध्र प्रदेश की ऐतिहासिक राजधानी है। आंध्र प्रदेश में इक्कत बुनाई को चिटका बुनाई भी कहा जाता है। आंध्र प्रदेश, विशेष रूप से पोचमपल्ली और चिरला के ''इक्कत'' कपड़े समान रूप से आकर्षक हैं। आमतौर पर ये क्षेत्र रेशमी साड़ियां, सूती साड़ी, कमीज बनाने की सामग्री, सामान, चादरें आदि तैयार करते हैं।
अब रूपांकन, सारयुक्त आधुनिकतावादी और बहुत से शानदार रंगों के साथ ज्यामितीय हैं।

5.2.2 भारत के प्रतिरोधित छपाई और चित्रित वस्त्र

सूती कपड़े की तैयार गांठो की सतह पर वर्णक के सीधे आवेदन के अलावा, नमूनों और संरचनाओं को बनाने के लिए बुने हुए कपड़े पर रंग फिक्सिंग की तकनीक में, प्रतिरोध या मार्डेंट प्रतिरोध या दोनों के संयोजन को कलम, ब्रश, धातु या लकड़ी के ब्लॉक या एक स्टैंसिल के माध्यम से लागू करना शामिल है। जहां नमूने या डिजाइन बनाने हैं, कपड़े के उन क्षेत्रों में रंग के प्रवेश का प्रतिरोध करने के लिए, उसे मोम, गोंद या चावल के पेस्ट, राल, स्टार्च या कीचड़ जैसे अभेद्य पदार्थों के साथ लेपित किया जाता है। एक बार कपड़े को रंगने के बाद, गर्म या ठंडे पानी में डुबो कर या इस्त्री और ब्रश करने के द्वारा प्रतिरोधक पदार्थों को हटाया जाता है।

मारडेंट प्रतिरोधित वस्त्र अलंकरण तकनीक में, मुद्रण या छपाई के रंजक मारडेंट (चरपरे) से तैयार कपड़े के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, या वैकल्पिक रूप से, कपड़े को रंग के घोल में डुबाने पर वह रंग को प्रतिक्रिया करने और परमार्डेंट लेपित नमूने में स्थिर होने का कारण बनता है। अजरख, कलमकारी, बगरू, डाबू, आदि इस तकनीक द्वारा मुद्रित वस्त्रों के कुछ उदाहरण हैं

**i.**गुजरात और राजस्थान की अजरख छपाई

अजरख का शाब्दिक अर्थ ''आज के लिए इसे रख'' है। कपड़े की इस शैली में एक श्रमसाध्य और लंबी प्रक्रिया के द्वारा दोनों पक्षों पर प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर प्रतिरोधित मुद्रण द्वारा हाथ से छपाई की जाती है।

रंगः शिल्प के सामान्य रंग लाल, पीला, नीला और काला हैं। काले और सफेद उभार के साथ समृद्ध लाल और एक गहरा नीला।

रूपांकनः छपाई में ज्यामितीय आकारों का प्रभुत्व है। चंपाकली, रिया, खरे, निपड, ग्रिनरी आदि

अंतिम उपयोगः पालने के बिछावन, लूंगी, साड़ी, पोशाक की सामग्री, तकिए के गिलाफ और मेजपोश के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

*चित्र 42 अजरख छपाई*

*चित्र 43 मछलीपट्टनम शैली की कलमकारी*

*चित्र 44 कालहस्ती कलमकारी*

आंध्र प्रदेश की कलमकारी

कलमकारी, भारत के कुछ हिस्सों में निर्मित हाथ से या ब्लॉक द्वारा मुद्रित सूती वस्त्रों का एक प्रकार है। यह शब्द फारसी शब्द कलम (कलम) और कारी (शिल्प कौशल) से लिया गया है, जिसका अर्थ है एक कलम से चित्र बनाना। कलमकारी नाम को हिन्दी / उर्दू में कलम (कलाम) कान (कारी) के रूप में अनुवादित किया जा सकता है, और संभवतः 10 वीं सदी में फारसी और भारतीय व्यापारियों के बीच व्यापार संबंधों से विकसित हुआ था।

*चित्र 45 कलमकारी वॉल हैंगिंग*

यूरोपीय व्यापारियों के पास भी कपड़े के इस प्रकार के अलंकरण का नाम था: पुर्तगाली इसे पिंटाडो कहते थे, डचों ने इसे सिज नाम दिया, और अंग्रेजों ने छींट शब्द का इस्तेमाल किया। भारत में कलमकारी कला के दो विशिष्ट शैलियां हैं – एक, श्रीकालहस्ती शैली और दूसरी, कला की मछलीपट्टनम शैली।

प्रयुक्त रंग: लोहा, टिन, तांबा, फिटकिरी, आदि के खनिज लवण के साथ पौधों के हिस्सों– जड़ों, पत्तों से रंग निकाल कर रंग प्राप्त किए जाते हैं – जिनका मारडेंट्स के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। आमतौर पर लाल, नीले, पीले, हरे और काले रंग देखे जाते हैं।

प्रयुक्त रूपांकनः फूलों और जानवरों के डिजाइन वाले रूपांकनों का इस्तेमाल किया जाता है। सजावटी पक्षी, फूल, लताओं, और मुख्यतः मुगल वास्तुकला मे पाए जाने वाले मेहराब या गुंबदों की डिजाइन में फारसी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

अंतिम उपयोगः चादर, बेड कवर, पोशाक सामग्री, मेजपोश, साड़ी, दीवार के पर्दे, आदि

III. मध्य प्रदेश का बाग मुद्रण

बाग प्रिंट को अपना नाम देने वाला, बाग, मध्य प्रदेश के धार जिले का एक छोटा सा आदिवासी शहर है। खत्री समुदाय, बाग जिसमें ''चिपाज'' या मुद्रक शामिल थे, लगभग 400 साल पहले सिंध में लरकाना से यहां आया था, जो अपनी अजरख छपाई के लिए प्रसिद्ध है। नदी से बाग की निकटता भी इसे पसंद करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारण था, क्योंकि छपाई की प्रक्रिया के लिए नदी का बहता पानी भी महत्वपूर्ण है।

रूपांकनः ज्यामितीय और पुष्प रचनाएं

प्रयुक्त कपड़ाः कपास, टसर, क्रेप, रेशम

प्रयुक्त रंगः इस प्रक्रिया में इस्तेमाल किए जाने वाले रंग वनस्पति और नील, हल्दी की जड़ें, अनार के छिलके, लाख, लोहे जैसे प्राकृतिक रंग हैं। ये प्राकृतिक रंग फीके नहीं पड़ते, कपड़े में प्रवेश कर उसे एक सुंदर रूप देते हैं।

चित्र 46. मध्य प्रदेश का बाग मुद्रण

अंतिम उपयोगः बिस्तर की चादर, साड़ी, ड्रेस सामग्री, दुपट्टे, तकियों के गिलाफ और कुशन के गिलाफ।

बगरू मुद्रण

*चित्र 47. बगरू छपाई की चादर*

राजस्थान का एक ग्रामीण भारतीय गांव, बगरू, जयपुर शहर से लगभग तीस किलोमीटर पूर्व में स्थित है। समृद्ध प्राकृतिक रंगों के साथ वस्त्रों पर हाथ की ब्लॉक छपाई की अपने पारंपरिक प्रक्रिया के लिए यह कई सदियों से जाना जाता है। बगरू की विस्तृत और समृद्ध रंग की फूलों वाली छपाई बहुत विशिष्ट हैं। गांव में चिपास, या एक पारंपरिक शिल्प समुदाय के लोग हैं, जो हाथ से कपड़े की छपाई करते थे। बगरू अपनी मारडेंट की प्रतिरोध प्रक्रिया डाबू और सीधी छपाई के लिए भी प्रसिद्ध है। उत्कीर्ण डिजाइन युक्त लकड़ी के ब्लॉक से छपाई की जाती है।

लगभग पचास साल पहले तक बगरू प्रिंट का ज्यादातर इस्तेमाल आसपास के समुदायों में महिलाओं के घाघरे (स्कर्ट) और ओढ़नी (स्कार्फ) के लिए किया गया, और चिपास ने इस स्थानीय बाजार पर पूरी तरह भरोसा किया।

इस्तेमाल किए जाने वाले रंगः बेज, लाल, काले रंग की पृष्ठभूमि। बगरू प्रिंट का आधार रंग हल्का पीलापन लिए होता है।

| |
|---|
| प्राकृतिक रंजक रंग–मजीठ, इंडिगो, अनार का छिलका, हल्दी, आदि |
| वर्णक रंग–हरा, गुलाबी, भूरा, बैंगनी, नीला, जंग। |
| बुनियादी रंग संयोजन मक्खन, लाल रंग और कालाय काला और सफेद और नीला (इंडिगो) और सफेद रंग । |

रूपांकनः कलियों, पत्तियों और तनो के अपने छोटे फूलों के डिजाइन के साथ पटासी। अपने अंदर झांकते टेंड्रिलों और विशिष्ट किनारियों के साथ **झड़**। हाथी – हाथी।

इन के अलावा पुष्प, सर्पिल, ज्यामितीय आकार और मछलियों के चित्र की अन्य किनारियों का इस्तेमाल किया जाता है।

अंतिम उपयोगः बगरू प्रिंट का समकालीन के साथ–साथ पारंपरिक परिधानों में काफी इस्तेमाल किया जाता है। पारंपरिक, बगरू प्रिंट का ज्यादातर घाघरा (स्कर्ट), ओढ़नी (स्कार्फ) और पगड़ियों (पगड़ी) के लिए इस्तेमाल किया गया था। आज, बगरू ब्लॉक प्रिंट के साथ बनाए गए उत्पादों ने घरेलू सामान, परिधान और सामान में प्रवेश किया है।

**v.** डाबू प्रतिरोधित रंगाई

*चित्र 48. ब्लॉक से लागू किया गया प्रतिरोधक पेस्ट*

*चित्र 49. प्रतिरोधक पेस्ट पर छिड़का गया लकड़ी का चूरा*

*चित्र 50. डाबू मुद्रित कपड़ा*

डाबू छपाई भी बगरू प्रिंट के साथ पाई जाने वाली एक अनोखी कला का रूप है। इसमें कपड़े की पृष्ठभूमि पर एक डिजाइन अंकित **कया जाता** है। डाबू नामक प्रतिरोध प्रक्रिया में मोम या गम मिट्टी के साथ राल के मिश्रण का उपयोग शामिल है। ब्रश या ब्लॉक या हाथ की मदद से इस प्रतिरोधक पेस्ट को कपड़े के कुछ भागों पर लगाया जाता है और इस पर लकड़ी की धूल छिड़की जाती है। मिट्टी के सूखने पर धूल कपड़े में चिपक जाती है। धूल एक जिल्द के रूप में कार्य करती है, जो रंगाई के समय रंग को प्रवेश करने से रोकती है। इसके बाद, पूरे कपड़े को डाई की एक कड़ाही में चयनित रंग में रंगा जाता है। जिस क्षेत्र में मिट्टी और चूरे का मिश्रण मौजूद हो वह रंग नहीं पकड़ता और बेरंग रहता है। रंगाई और सूखने के बाद, मिट्टी और मिश्रण को दूर करने के लिए कपड़े को धोया जाता है। कीचड़ में दरार की वजह से कुछ रंग कपड़े में प्रवेश कर जाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप धारियां बनती हैं जो कपड़े को बाटिक जैसा रूप देती हैं। कपड़े को विपरीत रंग के खिलाफ विशेष रूपरेखा और पैटर्न के मुद्रण द्वारा उभारा जाता है।

छपाई की यह अनूठी विधि पर्यावरण की दृष्टि से गैर विषाक्त है और किसी हानिकारक या कृत्रिम रंग का उपयोग नहीं करती है। डाबू नामक इस प्रतिरोध प्रक्रिया में मोम या गम मिट्टी के साथ राल के मिश्रण का उपयोग शामिल है।

## सारांश

भारत एक विविधता पूर्ण देश है, जिसमें संस्कृतियों और परंपराओं की विस्तृत श्रृंखला है। भारतीय कला और शिल्प विश्व प्रसिद्ध हो चुके हैं। कढ़ाई की परंपरागत तकनीकों को पीढ़ी दर पीढ़ी पारित किया गया है। इस प्रकार पूरे देश के कोने–कोने में विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर तकनीक और उत्पादों की विरासत बनाई गई है। भारतीय राज्यों में से प्रत्येक के कुछ ऐसे शिल्पों में कश्मीर की कशीदा, हिमाचल प्रदेश के चंबा रूमाल, पंजाब की फुलकारी, कर्नाटक की कसूती, लखनऊ की चिकनकारी, बंगाल का कांथा, सोने एवं चांदी की कढ़ाई आदि शामिल हैं।

लोगों ने जब बुनाई सीखी तब स्वाभाविक रूप से जो सामग्री आसानी से उपलब्ध थी उसी का उपयोग किया और वस्त्र बनाए गए थे। समय के साथ कारीगरों के हाथों से वस्त्रों की डिजाइनिंग विकसित की गई और विभिन्न तकनीकों के माध्यम से कपड़े और परिधानों को समृद्ध बनाया गया।

भारत के पारंपरिक भारतीय वस्त्र उद्योग में पारंपरिक वस्त्र सजावट की तीन मुख्य तकनीकें हैंः करघा की बुनाई और अलंकरण, प्रतिरोधित रंगाई का काम, जिसमें बांधना और रंगाई शामिल है, इनके साथ ही चित्रकला, मुद्रण प्रक्रिया और कढ़ाई।

बांधनी, लहरिया, इक्कत कपड़े–बेधास और पटोला, आदि इन तकनीकों में से कुछ के उदाहरण हैं

तैयार कपास के लठ्ठे की सतह पर वर्णक के सीधे **उपयोग** के अलावा, बुने हुए कपड़े पर पैटर्न और रचनाओं को बनाने के लिए रंग को स्थिर करने की तकनीकों में प्रतिरोध, मारडेंट प्रतिरोध या दोनों के संयोजन को एक कलम, ब्रश, धातु या लकड़ी के ब्लॉक या एक स्टैंसिल के माध्यम से लगाना शामिल है। अजरख, कलमकारी, बगरू, डाबू, आदि इस तकनीक द्वारा मुद्रित वस्त्रों के कुछ उदाहरण हैं।

अपनी जानकारी की जाँच करें

1. निम्नलिखित को मिलाएः

| | |
|---|---|
| कसीदा | पंजाब |
| चंबा | कश्मीर |
| चिकनकारी | चीथड़ों की कला |
| फुलकारी | सफेद कढ़ाई |
| क्सुती | अहीर |
| कांथा | कर्नाटक |
| कच्छ | हिमाचल प्रदेश |

2. सच के लिए 'सही' और झूठ के लिए 'गलत' लिखें
क) तिल पत्र फुलकारी का एक प्रकार है
ख) मोची भारत में एक चेन **स्टिच** का प्रयोग किया जाता है
ग) कामदानी एक भारी कढ़ाई और जरदोजी हल्की कढ़ाई है
घ) कच्छ कढ़ाई राजस्थान से है
ङ) रनिंग **स्टिच** का मुख्य रूप से कांथा कढ़ाई में प्रयोग किया जाता है
च) फुलकारी की कढ़ाई के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रेशमी फ्लास (लच्छे) को पैट के रूप में जाना जाता है
छ) कसूती की क्रॉस **स्टिच** को मेंथी जाना जाता है
ज) ताईपची, मुरी और फंदा कसीदा कढ़ाई के प्रकार हैं

झ) सोने और चांदी की कढ़ाई केवल उत्तर भारत में ही प्रचलित है

3. निम्नलिखित परंपरागत तकनीकें किन राज्यों से संबंधित हैंः
क) डाबू
ख) अजरख
ग) बाग
घ) कलमकारी

4. बंधेज (टाई एंड डाई) क्या है?
5. सही या गलत
क) कलमकारी केवल हाथ से चित्रित कपड़ा है।
ख) बांधनी उड़ीसा में पाया जाता है
ग) चिपास पारंपरिक मुद्रक हैं।
घ) बंधास, पटोला और तेलिया रूमाल इकत कपड़े हैं।
ङ) लहरिया एक पारंपरिक मुद्रण तकनीक है।